अपनी भाषा में अभिव्यक्ति के जरिए ही शिक्षा का सफर आसान किया जा सकता है

गणेश चौहान
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डोंगरगांव, कसरावद
खरगोन, मध्यप्रदेश

प्रधानाध्यापक – फकीरा पंवार
भोजन माता – सत्यधाम स्वयं सहायता समूह
नामांकन – 37

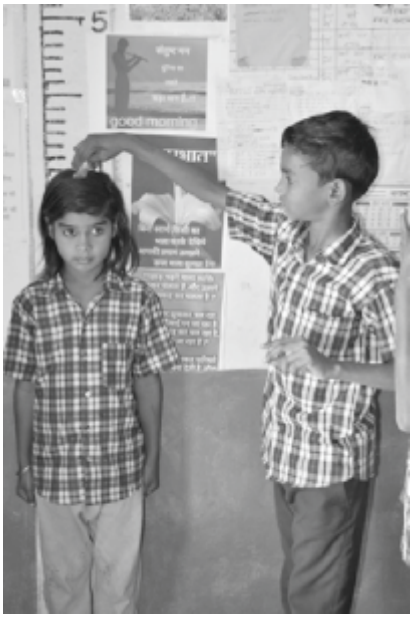

''मेरा मानना है कि जब बच्चे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं तो उनके सीखने का सफर आसान हो जाता है। यह तभी संभव है जब बच्चों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का मौका मिले। और मैं यही करता हूं।'' यह बात एक प्राथमिक स्कूल के शिक्षक गणेश चौहान ने बताई। जब उनसे पूछा गया कि फिर बच्चे हिंदी और अंग्रेजी कैसे सीखेंगे? इसके जवाब में गणेश चौहान कहते हैं कि बच्चों को हिंदी नहीं आती इसका मतलब यह तो नहीं कि उन्हें कुछ आता नहीं है। अपनी बात को बच्चे अपनी भाषा में बेहतरी से रख पाते हैं। गणेश चौहान, प्राथमिक स्कूल डोंगरगाव में सन् 2010 से पदस्थ हैं। डोंगरगाव, मध्यप्रदेश के पश्चिमी निमाड़ के खरगोन जिले के कसरावद विकास खंड में स्थित है। कसरावद विकास खंड मुख्यालय से डोंगरगांव, इंदौर रोड़ पर लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर बसा एक गांव है। इस गांव की जनसंख्या लगभग 1100 के आसपास है। यहां अहीर, यादव व जनजाति के लोग निवास करते हैं। सरकारी स्कूल डोंगरगांव में 37 बच्चे अध्ययनरत हैं। पहली कक्षा में 8, दूसरी में 7, तीसरी में 8, चौथी में 5 और पांचवी में 9 बच्चे दर्ज हैं। अधिकांश बच्चे पिछड़ी जाति के हैं।

इस स्कूल में दो शिक्षक हैं। गणेश चौहान मानते हैं कि शिक्षा हर बच्चे का हक़ है और हर बच्चा सीखने की क्षमता रखता है। वे कहते हैं कि यह मैं अपने स्कूल के बच्चों के साथ किए गए कामों के आधार पर कह रहा हूं। दरअसल, सीखना तभी संभव होता है जब बच्चों के साथ शिक्षक प्रेम व स्नेह के साथ पेश आएं। बच्चों को इंसान के रूप में देखना व उन्हें बराबरी का दर्जा देना, सीखने की धार को तेज करता है।

गणेश चौहान अपने लहजे में बताते हैं कि ''छोटे बच्चों के साथ काम करने के लिए यह बात समझना जरूरी है कि पहले उनके विश्वास को जीता जाय और यही मैं करने की कोशिश करता हूं। यह एक बड़ी चुनौती है जिस पर विजय पाने से आगे का रास्ता आसान हो जाता है।'' गणेश चौहान ने इस बात को अच्छे से न केवल समझा है बल्कि इसे कक्षाओं में अपनाया भी।

डोंगरगांव स्कूल की प्रीति व दुर्गा नामक बच्चियों से बातचीत की गई, उन्होंने बताया कि शिक्षक उनके साथ घर से भी ज्यादा अच्छा व्यवहार करते हैं। बच्चों ने बताया कि सर हमें घुमाने ले जाते हैं। गणेश कहते हैं कि बच्चों ने जिद की कि वे मेले में जाना चाहते हैं तो बच्चों की जिद को शिक्षक ने स्वीकार किया और मेले में जाने की योजना बनाई और उन्हें लेकर गये। यह दिलचस्प है कि बच्चे शिक्षक के साथ जिद करते हैं। जिद करना तो अपनों के साथ ही संभव है।

इस वर्ष शिक्षक बच्चों को कसरावद में मेले में ले गए और वहां बच्चों ने झूला झूला। आगे बच्चे बताते हैं कि मेले में सर ने उन्हें जलेबी और आइस्क्रीम खिलाई व खूब मजे किए।

गणेश बताते हैं कि वे बच्चों को कसरावद कस्बे में स्थित पुरातत्व संग्रहालय में ले गए जहां बच्चों ने यहां के इतिहास को जाना–समझा। बच्चों को बाहर की दुनिया में अच्छा लगता है।

जब उनसे पूछा कि बच्चों को बाहर ले जाने के पीछे आपकी मंशा क्या है, इस पर शिक्षक बताते हैं कि बच्चों को कक्षा की चहारदीवारी से बाहर की दुनिया का अनुभव जरूर देना चाहिए।

नई चीज़ों को देखना–समझना भी तो शिक्षा का अहम हिस्सा है। पुरातात्विक धरोहर को दिखाना भी शिक्षा का हिस्सा है। इसे कैसे हम संजो सकते हैं, इसकी समझ बचपन से ही बच्चों में डालनी चाहिए। हमारे आसपास की दुनिया को समझना तभी संभव है जब उन्हें उसका अनुभव दिया जाए।

मेले में बच्चे तो जाते ही हैं लेकिन स्कूल के बच्चों के साथ जाना एक अलग तरह का आनंद व अनुभव देता है। मैं बच्चों को ऐसे मौके भरपूर देने की कोशिश करता हूं। गणेश बताते हैं कि बच्चों को नर्मदा किनारे ले जाया गया। यह कोई कम दिलचस्प नहीं कि शिक्षक अपने बच्चों के साथ अपने निजी अनुभव भी साझा करते हैं। गणेश ने बताया कि पिछले दिनों मेरी बेटी की सगाई का आयोजन मेरे गांव में निवास स्थान से किया था। मैंने उस दौरान अवकाश लिया था। बच्चों को मैंने बताया तो उन्होंने कहा कि हम भी आपके घर आना चाहते हैं। शिक्षक और बच्चों के बीच लगाव की यह एक मिसाल कही जानी चाहिए। बच्चे, शिक्षक के घर सगाई के कार्यक्रम में शिरकत करने गए। यह भी उल्लेखनीय है कि बच्चों के लिए शिक्षक ने वाहन की व्यवस्था स्वयं की।

मामला, प्रेम और लगाव से आगे का भी दिलचस्प है। लगभग तीन बरस पहले गणेश चौहान, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से जुड़े। टीएलसी खुलने के पहले कसरावद विकासखंड मुख्यालय पर शाम के सत्रों का आयोजन प्रारंभ हो चुका था। इन सत्रों में गणेश चौहान ने भागीदारी प्रारंभ की। गणेश स्वीकार करते हैं कि शिक्षा व समाज के प्रति उनके नजरिए में भारी बदलाव फाउंडेशन से जुड़ने के बाद आया। शिक्षा के मूल मसलों पर समझ बनी और उसे वे अपनी कक्षाओं में रोपने में जुट गए।

स्कूल की कक्षाओं में उन्होंने रीडिंग कार्नर की स्थापना की। बाल साहित्य की किताबें तो पहले से थीं ही लेकिन अब उनका इस्तेमाल बच्चों को पढ़ना सिखाने में किया जाने लगा। कक्षाओं की

दीवारों पर कविताओं, कहानियों के पोस्टर्स लगाए और उन पर काम किया जाने लगा।

कक्षा में टीचिंग–लर्निंग मटेरियल बच्चों के साथ मिलकर बनाया गया। भाषा शिक्षण में शब्द कार्ड बनाए, महीनों के कार्ड बनाए, दिनों व अक्षरों के कार्ड बनाए। कार्ड्स इतने बनाए कि प्रत्येक बच्चे के लिए उपलब्ध हो सकें। इसी प्रकार से गणित की बुनियादी समझ बनाने के लिए तीली बंडल, गिनमाला, मोती तार व गणक (एबेकस) इत्यादि बनाए व उनका इस्तेमाल कक्षा शिक्षण में किया जाने लगा। इसका सकारात्मक असर बच्चों के सीखने में देखने को मिला। कक्षा शिक्षण के अवलोकन से हमें समझ में आया कि बच्चे बेबाकी से कक्षा में बोलते हैं। उनकी कक्षा का एक नजारा कुछ यूं है :

''मैं और मेरे साथी कालू राम शर्मा डोंगरगांव स्कूल पहुंचे तो देखा कि कक्षा में शिक्षक गणेश चौहान गणित पढ़ा रहे हैं। दीवारों पर आकर्षक पोस्टर्स लगे हुए हैं। शिक्षक गिनमाला के जरिए बच्चों को गिनती सिखा रहे हैं। कक्षा में दो कुर्सियों के बीच एक पतली रस्सी को बांधा गया है जिसमें गिनमाला के मोती पिरोए हुए हैं। यही गिनमाला है। इसमें बच्चों को मोती गिनने को कहा जा रहा है। बारी–बारी से बच्चे आकर मोतियों को गिन पा रहे हैं। इसी दौरान हमने बच्चों से उल्टी गिनती के लिए कहा। बच्चों से ऊपर से नीचे अर्थात 60 के पहले 59, 58, 57 गिनने को कहा गया। यह दिलचस्प था कि बच्चों में गिनती की समझ पुख्ता थी। इसके बाद ही गिनमाला के जरिए जोड़ और घटाव की अवधारणा पर काम किया गया। पतली रस्सी में पिरोए मोतियों में कितने मोती मिलाएंगे कि अमुक संख्या बन जाएगी। कितनी कम करेंगे तो अमुक संख्या बन जाएगी। बच्चे कर पा रहे थे। न केवल गिनमाला पर बल्कि वे लिखित रूप से भी कर व समझ पा रहे थे। हमने समझा कि शिक्षक केवल गतिविधि करवाने के लिए गतिविधि नहीं करवाते। गतिविधि का मकसद किसी अवधारणा को समझना है और ऐसा ही कक्षा में हो पा रहा था।''

शिक्षक बच्चों को कहानी सुनाते हैं। यह पूछने पर कि भाषा शिक्षण में कहानी का क्या महत्व है? उन्होंने बताया कि बच्चों को कहानियां सुनना पसंद है। कहानी में उन्हें रस आता है। कहानियां बच्चों के ध्यान को केंद्रित करने में मददगार होती है। कहानियों में क्रमबद्धता होती है। यह उनके विचार को पैना करती है। कक्षाओं में बच्चे स्वतंत्र होते हैं। बच्चे की मर्जी का अधिक से अधिक ख्याल रखा जाता है। बच्चों के बीच ही शिक्षक बैठते हैं और कक्षा शिक्षण करते हैं। गणेश चौहान की कक्षा अपने आप में एक उदाहरण है जिसमें बच्चे आनंद से सीखते हैं। शिक्षक बच्चों के साथ अधिकतर (स्थानीय बोली) निमाड़ी में बातचीत करते हैं। इसका असर यह हुआ कि बच्चे जो हिंदी की कमजोर समझ के चलते बोलते नहीं थे, अब बोलने लगे हैं। वे कहते हैं कि मेरे लिए बच्चों का बोलना अहम है। इसलिए उनके साथ निमाड़ी में बातचीत करना जरूरी समझता हूं।

शिक्षक कहते हैं कि पहले मैं बच्चों से हिंदी में ही बातचीत करता था। पिछले वर्ष मुझे फाउंडेशन द्वारा शिक्षकों के लिए सेंधवा के पास आधारशिला स्कूल जाने का मौका मिला। यहां सीखने को मिला कि आधारशिला के बच्चों को वहां की स्थानीय भाषा बारेली में अभिव्यक्ति के मौके दिए जाते

हैं। मैंने वहां से यह सीख ली और तय किया कि मैं भी अपने बच्चों के साथ निमाड़ी (स्थानीय बोली) में ही बातचीत करूंगा।

तो फिर बच्चे हिंदी कब सीखेंगे? इसके जवाब में वे कहते हैं कि बच्चे जब हिंदी में बोल ही नहीं पाते हैं तो कोई मतलब नहीं रह जाता। निमाड़ी भाषा के कंधे पर सवार होकर बच्चे हिंदी भी सीख जाएंगे। वे कहते हैं कि ऐसा नहीं कि निमाड़ी भाषा के इस्तेमाल से बच्चे हिंदी नहीं सीख पा रहे हैं। बच्चों के साथ हिंदी में भी काम होता है और वे सीख पा रहे हैं। लेकिन एक बेगानी भाषा को अपनी भाषा को आधार बनाकर ही सीखा जा सकता है। शिक्षक उल्लेख करते हैं कि मध्यप्रदेश में फाउंडेशन द्वारा आयोजित कैंप में जाने का मौका मिला जहां मैंने जो कुछ भी सीखा उसे कक्षा में आजमाने की कोशिश करता हूं।

हमने बच्चों से पूछा कि क्या आपके शिक्षक कक्षा में मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं?इस पर बच्चों ने कहां– हां। हमने कहा कि क्या करते हैं?बच्चों ने बताया कि सर का मोबाइल तो हम ही चलाते हैं। यह दिलचस्प बात लगी कि शिक्षक ने बताया कि जब उन्हें कोई प्रशासनिक काम करना होता है तो बच्चे मोबाइल में यूट्यूब खोलकर कहानियां देखते–सुनते हैं।

शिक्षक कहते हैं कि– 'स्कूल में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। मैं अभी अपने काम से संतुष्ट नहीं हूं। कहते हैं कि मुझे और सीखना है और कक्षा के लिए नए–नए टीएलएम बनाना है। वे बताते हैं कि सबसे बड़ी चुनौती है बच्चों की अनियमितता। परिवार की माली हालत कमजोर होने से माता–पिताओं को अन्य जगहों पर अपनी रोजी–रोटी के लिए जाना पड़ता है। इसी तरह बच्चों को अन्य काम करने होते हैं इसलिए वे नियमित नहीं आ पाते। स्कूल में आने के बाद शिक्षक समुदाय में जाते हैं और बच्चों को स्कूल में लेकर आते हैं। जो बच्चे नियमित रूप से स्कूल आते हैं वे भाषा व गणित में अच्छा सीख पाते हैं। इसके लिए हम कोशिश कर रहे हैं।

उन्होंने अन्त में फिर से जोर देकर कहा कि "प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाना बड़ी चुनौती है। बच्चों को विश्वास में लेना उनके सीखने को आसान बनाता है"।

(गणेश चौहान की शफ़ीक़ शेख व कालूराम शर्मा की हुई बातचीत पर आधारित)